

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 1a, “इब्रानियों को पत्र” का परिचय: धर्मोपदेश का कौन, क्या और क्यों (भाग 1)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

जब पूछा गया कि नए नियम की आपकी पसंदीदा पुस्तक कौन सी है? बहुत से लोग उत्तर नहीं देते, इब्रानियों। इब्रानियों को लिखे गए पत्र को पढ़ना मुश्किल लग सकता है, क्योंकि इसमें लेविटिकल पंथ और प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन की जटिल जांच की गई है, और इसे यीशु के कार्य से जोड़ने का प्रयास किया गया है, या पुराने नियम के विभिन्न अंशों की इसकी व्यापक और आधुनिक कानों के लिए अक्सर अजीब व्याख्या की गई है। यह कई मायनों में एक रहस्यमयी पाठ है, और इब्रानियों का संदेश वास्तव में क्या है, यह समझने के लिए पुराने नियम से खुद को नए सिरे से परिचित कराने में बहुत काम करने की आवश्यकता है।

हालाँकि, इब्रानियों की पुस्तक हमारे धर्मग्रंथ का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है, और यह ईसाई धर्मशास्त्र के निर्माण और शिष्यत्व के लिए दृष्टि में कुछ विशिष्ट योगदान देता है। इसलिए, यह कई तरीकों से हमारे गहन अध्ययन को पुरस्कृत करता है। इब्रानियों को लिखे गए पत्र में हमें जो चीजें दी गई हैं, उनमें से एक, जो किसी भी अन्य नए नियम के पाठ से अलग और अधिक गहराई से है, वह है यीशु के व्यक्तित्व और उनकी सांसारिक सेवकाई के दायरे से परे उनकी उपलब्धियों पर एक नज़र।

इब्रानियों के लेखक ने वचन के देहधारी होने से पहले पुत्र की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बात की है। उन्होंने प्रारंभिक चर्च को कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण शुरुआती बिंदु प्रदान किए, ताकि वे मसीह विज्ञान को विकसित कर सकें कि पुत्र यीशु के रूप में अपने अवतार से पहले क्या कर रहा था। इब्रानियों के लेखक ने यीशु की मृत्यु और स्वर्गारोहण के महत्व पर धार्मिक चिंतन प्रदान किया है, जिससे प्रारंभिक चर्च प्रायश्चित के अपने सिद्धांतों को विकसित करने और क्रूस पर चढ़ने और उसके बाद, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की सार्थकता, परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते और नई वाचा के उद्घाटन के लिए अपनी समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ा।

इब्रानियों में भी, यीशु के साक्षी के रूप में पुराने नियम के महत्व को अधिक हद तक खोजा गया है। अब, सुसमाचार का कोई भी पाठक इस विषय का सामना करता है। पॉलिन पत्र का कोई भी पाठक इस विषय का सामना करता है।

लेकिन इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम में इस बात की गवाही खोजने के लिए बहुत दूर तक का सफर तय किया है कि परमेश्वर पुत्र के व्यक्तित्व में क्या करेगा। इसलिए, वह हमें पुराने नियम की एक विशिष्ट व्याख्या प्रस्तुत करता है, जिसके द्वारा कुछ मामलों में हम पुराने नियम के पाठ का व्यापक अर्थ, पूर्ण अर्थ पाते हैं, इसे पुत्र को संबोधित करके, या पुत्र के बारे में, या यहाँ तक कि, सबसे असाधारण रूप से, पुत्र के होठों पर रखकर पढ़कर। इब्रानियों को शायद विश्वास पर

अपने अध्याय के लिए सबसे अधिक जाना जाता है, जो उन लोगों की परेड है जिन्होंने इस दुनिया में विश्वास के गुण का उदाहरण दिया है।

अध्याय 11 में, लेकिन अन्य अंशों में भी, इब्रानियों ने हमें विश्वास की प्रकृति, विश्वास कैसे व्यवहार करता है, और इस दुनिया में कार्य में विश्वास कैसा दिखता है, इस बारे में बहुत कुछ बताया है। इसलिए, यह ईसाई नैतिकता और ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के बारे में सोचने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन जाता है। इब्रानियों के लिए पत्र ब्रह्मांड विज्ञान, परम वास्तविकता के बारे में प्रश्नों, ब्रह्मांड के निर्माण के तरीके और, इसलिए, हम इस वर्तमान दृश्यमान वास्तविकता के माध्यम से कैसे बुद्धिमानी से नेविगेट करते हैं, पर भी उचित मात्रा में ध्यान देता है।

अंत में, इब्रानियों के लेखक ने अपनी कलीसिया द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों की प्रकृति के कारण, पीड़ा की समस्या पर बहुत ध्यान दिया है, जो ईसाई अनुभव में एक चिरस्थायी महत्वपूर्ण समस्या है। वह विशेष रूप से इस बात पर ध्यान देता है कि पीड़ा के अनुभव की व्याख्या कैसे की जाए, जब वह पीड़ा ईश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञाकारिता का परिणाम हो। वह उसके बाद हर युग में कलीसिया को यीशु के प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता के लिए पीड़ा को समझने के लिए संसाधन प्रदान करता है, ताकि उसे इसका सामना करने और यहां तक कि इसके माध्यम से विजय प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

इब्रानियों की पुस्तक में ऐसी चुनौतियाँ भी हैं, जिनका सामना हर युग के मसीहियों को करना चाहिए, यदि उन्हें अपने शिष्यत्व को पूर्ण रूप से निभाना है। सबसे पहले, इब्रानियों की पुस्तक कृतज्ञता के लिए एक आह्वान है, न केवल यह स्वीकार करने के लिए कि परमेश्वर दयालु है, बल्कि यह भी कि परमेश्वर की कृपा ने हम पर कुछ दायित्व डाले हैं कि हम उन तरीकों से प्रतिक्रिया करें जो अंततः हमारे अपने लाभ के लिए हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर की दया को अपने जीवन को प्रभावित करने देते हैं, हमें ऐसे लोगों में बदल देते हैं जो परमेश्वर का सम्मान करेंगे, परमेश्वर के प्रति वफादार रहेंगे, और परमेश्वर की सेवा करेंगे। इब्रानियों की पुस्तक शर्म को तुच्छ समझने का आह्वान भी है, जिसका अर्थ है उन लोगों की स्वीकृति के लिए जीने से मुक्ति पाना जो स्वयं परमेश्वर की ओर उन्मुख नहीं हैं।

इसलिए, इब्रानियों ने हर युग में चर्च को स्वर्ग की प्रशंसा के लिए जीने और इस जीवन में स्वीकृति की चिंता से विचलित और संभावित रूप से पटरी से उतरने की चुनौती दी है। अंत में, इब्रानियों ने एक पर्याप्त रूप से सहायक ईसाई समुदाय बनाने के महत्व पर भी पर्याप्त ध्यान दिया है। यदि व्यक्तिगत शिष्य शिष्यत्व में दृढ़ रहने में सक्षम होने जा रहे हैं या हमारे तेजी से निजीकृत और व्यक्तिगत दुनिया में उनके सामने रखी गई दौड़ को चलाने में सक्षम होने जा रहे हैं, तो यह इस प्राचीन उपदेशक से सुनने के लिए एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण चुनौती है।

इब्रानियों के रहस्यों में से एक इसका लेखकत्व है। आमतौर पर यह माना जाता रहा है कि इब्रानियों पॉल का पत्र था, इस तथ्य के बावजूद कि पाठ स्वयं, शुरू से अंत तक, गुमनाम है। फिर भी, पॉलिन लेखकत्व को किंग जेम्स संस्करण में इस पत्र को दिए गए शीर्षक के रूप में माना जाता है, जो कि इब्रानियों को पॉल का पत्र है।

यह धारणा पुरानी है। केवल P46, पपीरस संख्या 46 के रूप में जानी जाने वाली पांडुलिपि में, जो वर्ष 200 के लगभग पॉल के पत्रों का एक प्रारंभिक पपीरस संग्रह है, लेखक ने इब्रानियों को सीधे रोमियों के बाद रखा है, जिससे इसे पॉलिन कॉर्पस में दूसरा स्थान मिला है। निस्संदेह, इब्रानियों अध्याय 13, श्लोक 23 में तीमुथियुस के संदर्भ ने इस प्रवृत्ति में योगदान दिया है।

बेशक, तीमुथियुस पॉल का एक प्रसिद्ध यात्रा करने वाला और मिशनरी साथी था और अक्सर पॉलिन के जाने-माने पत्रों का सह-प्रेषक या सह-लेखक था। हालाँकि, यह बहुत ही असंभव है कि पॉल ने इब्रानियों को लिखा हो। सबसे पहले, इब्रानियों का लेखक एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोलता है जो दूसरों के उपदेशों से मसीह में विश्वास में परिवर्तित हो गया है।

वह अध्याय 2, श्लोक 3 और 4 में इसे बहुत स्पष्ट करता है। दूसरी ओर, पॉल इस बात पर अड़ा हुआ है कि वह किसी इंसान की एजेंसी के ज़रिए नहीं बल्कि ईश्वर के सीधे हस्तक्षेप के ज़रिए आस्तिक और प्रेरित बना। गलातियों 1:11 से 17 और 1 कुरिन्थियों 15:3 से 10 इस बात को ज़ोरदार तरीके से बताते हैं, यहाँ तक कि पॉल ने गलातियों में इस आशय की शपथ भी ली है। इसलिए, पॉल के लिए इब्रानियों में यह स्वीकार करना बहुत ही असंभव होगा कि, वास्तव में, यह मसीह के गवाहों का प्रचार था जिसने उसे परिवर्तित किया, क्योंकि यह पॉल के अन्य जगहों पर किए गए अपने अडिग दावों से असंगत है।

दूसरा कारक जो इस बात को बहुत ही असंभव बनाता है कि पॉल ने यह पत्र लिखा है, वह है लेखक की अलंकारिक कलात्मकता के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता। यह पॉल के प्रचार के अपने दर्शन के विपरीत है। 1 कुरिन्थियों, अध्याय 2, श्लोक 1 से 5 में, पॉल लिखते हैं कि उन्होंने प्रचार किया, उद्धरण, शब्दों या बुद्धि की महानता में नहीं, उद्धरण समाप्त, ऐसा न हो कि कुरिन्थियों का अनुनय पवित्र आत्मा के दृढ़ विश्वास के बजाय वक्ता के कौशल पर आधारित हो।

हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने अपने श्रोताओं के कानों को प्रसन्न करने और उन्हें यह विश्वास दिलाने और महसूस करने में मदद करने के लिए कि वे एक उच्च कुशल वक्ता का उपदेश सुन रहे हैं, अलंकरण की कला का स्वतंत्र और व्यापक रूप से उपयोग किया है, ऐसा कुछ जिसका आरोप पॉल पर कभी नहीं लगाया गया या उसे अपने मौजूदा पत्रों में होने का श्रेय नहीं दिया गया, जैसा कि 2 कुरिन्थियों ने स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया है। इब्रानियों की प्रामाणिकता पर विवाद भी पत्र के लेखक के बारे में प्रारंभिक चर्च की बुनियादी अनिश्चितता को प्रकट करता है। यदि पत्र को पॉल के हाथ से आने के बारे में पूरे विश्वास के साथ जाना जाता, तो इसे एक प्रेरितिक और इसलिए, पश्चिमी और पूर्वी दोनों चर्चों में एक विहित पाठ के रूप में व्यापक स्वीकृति मिली होती।

हालाँकि, चौथी सदी के अंत तक यह एक गंभीर बहस का विषय रहा। इस विवाद से उन लोगों की ओर से पॉलिन के लेखक होने का दावा करने का एक मकसद भी पता चलता है, जो इस पत्र को आधिकारिक मानते थे, क्योंकि इस दावे ने पूरे चर्च द्वारा इसे मान्यता दिए जाने की संभावनाओं को बढ़ा दिया था। इब्रानियों के लेखक होने के बारे में दो बातें निश्चित लगती हैं।

पॉल ने इसे नहीं लिखा, लेकिन पॉलिन सर्कल में से किसी ने इसे लिखा था। ओरिजन, क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया, टर्टुलियन और अन्य शुरुआती चर्च के पिता, अगर वे इस काम का श्रेय पॉल

को नहीं देते हैं, तो इसे पॉल से जुड़े किसी व्यक्ति को देते हैं। फिर से, यह शायद अध्याय 13, श्लोक 23 में तीमुथियुस के संदर्भ को पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका है।

मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है, और यदि वह समय पर आता है, तो जब मैं आपसे मिलूँगा, तो वह मेरे साथ होगा। पॉल के सहकर्मियों में से एक अभी भी पॉल के सहकर्मियों में से एक, अर्थात् तीमुथियुस के साथ अपने आंदोलनों का समन्वय करने की कोशिश कर रहा है। दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध और तीसरी शताब्दी की शुरुआत के एक लैटिन चर्च के पिता टर्टुलियन ने यहाँ लेखक के लिए बरनबास को उम्मीदवार के रूप में पसंद किया क्योंकि बरनबास को लेवी के रूप में जाना जाता था, और निश्चित रूप से, लेवी के पुजारी का पद इब्रानियों में एक प्रमुख विषय है।

अपोलोस का नाम इसलिए भी अक्सर प्रस्तावित किया जाता था क्योंकि उसे प्रेरितों के काम अध्याय 18 पद 24 में एक सम्मानित लोगियोस, एक कुशल वक्ता के रूप में याद किया जाता था। अपोलोस की बयानबाजी की क्षमता भी कोरिंथियन चर्चों के बीच उसकी लोकप्रियता के पीछे है, खासकर उन लोगों के बीच जिन्होंने पॉल की कमजोर बोलने की आलोचना की थी। हाल के दशकों में प्रिस्का या प्रिस्किल्ला को लेखक के रूप में नामित करना लोकप्रिय हो गया है, जिसने खुद अपोलोस को विश्वास के बारे में सिखाने में हाथ बँटाया था और जो पॉलिन सर्कल में एक प्रमुख मिशनरी जोड़े का आधा हिस्सा था।

हालाँकि यह वांछनीय हो सकता है कि प्रारंभिक चर्च में एक महिला नेता के हाथ से नया नियम पाठ हो, लेकिन इसके खिलाफ कुछ संकेत हैं। इनमें से सबसे अधिक बताने वाला इब्रानियों अध्याय 11, श्लोक 32 में एक कृदंत है। ग्रीक में, कृदंत और विशेषण लिंग के होते हैं।

वे या तो पुल्लिंग, स्त्रीलिंग या नपुंसक लिंग के होते हैं, जो इस बात पर निर्भर करता है कि वे क्या वर्णन कर रहे हैं। इब्रानियों के लेखक ने खुद को संदर्भित करते समय पुल्लिंग कृदंत का उपयोग किया है। सबसे पहले यह असंभव है कि इब्रानियों के लेखक की तरह ग्रीक में इतना कुशल लेखक आसानी से यह गलती कर सकता है, लेकिन यह भी बहुत असंभव है कि पहली सदी में एक महिला शिक्षक एक पुरुष उपदेशक के रूप में अपनी पहचान पेश करके अपने लिंग को छिपाने की कोशिश करेगी।

प्रारंभिक चर्च महिला शिक्षकों के लिए खुला था। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इब्रानियों के लेखक को पता है कि इब्रानियों के श्रोता इस उपदेशक को पिछले मुलाकातों से व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, जैसा कि हम अध्याय 13, श्लोक 19 में सीखते हैं, जहाँ यह वाक्य, मुझे आशा है कि तुम्हें पुनः प्राप्त हो जाएगा, एक पुराने समय को इंगित करता है जब लेखक और श्रोता एक साथ थे। इस प्रकार, उपदेशक के लिंग के संबंध में उन्हें मूर्ख नहीं बनाया जा सकता था।

इस प्रकार, यदि वह प्रिस्का या प्रिस्किल्ला होती, तो उसके पास अपनी पहचान छिपाने के लिए किसी भी तरह से पुल्लिंग कृदंत का उपयोग करने का कोई कारण नहीं होता। अंत में, इब्रानियों

के लेखकत्व के लिए ओरिजन का समाधान सबसे सही है। लेकिन पत्र किसने लिखा? भगवान ही जानता है।

हम नहीं जानते कि पौलुस की बड़ी सेवकाई टीम में से किसने यह उपदेश लिखा होगा, और अंत में अनुमान लगाने से हमें कुछ हासिल नहीं होगा। भले ही हम इब्रानियों के लेखक का नाम न जानते हों, हम उसके बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें जान सकते हैं। एक बात यह है कि वह एक सुशिक्षित व्यक्ति था।

नए नियम के सभी लेखकों में से, इब्रानियों के लेखक ग्रीक भाषा के एक मास्टर के रूप में सामने आते हैं। हम इसे उनके द्वारा कृदंतों के उदार उपयोग में पाते हैं, जिसमें कई जननात्मक निरपेक्ष निर्माण और पूरे नए नियम में बहुत कम भविष्य के कृदंतों में से एक शामिल है। वह उस चीज़ में भी माहिर हैं जिसे व्याकरणविद हाइपोटैक्टिक वाक्यविन्यास कहते हैं।

इसका अर्थ है अधीनस्थ उपवाक्यों का व्यापक उपयोग, जो ग्रीक भाषा में उनकी सुविधा के संदर्भ में परिष्कार के उच्च स्तर को दर्शाता है। इसके विपरीत, दूसरे सुसमाचार के लेखक मार्क पैराटैक्टिक वाक्यविन्यास का उपयोग करते हैं। वह अपने विचारों और उपवाक्यों को एक दूसरे के अधीन करने के बजाय संयोजनों के साथ जोड़ता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मार्क द्वारा ग्रीक भाषा का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति से कहीं अधिक है, जिसने ग्रीक को दूसरी भाषा के रूप में सीखा है और शायद कभी भी उस भाषा में रचना करने में पूरी तरह सहज नहीं हुआ है। दूसरी ओर, इब्रानियों के लेखक ने ग्रीक भाषा का प्रयोग एक देशी वक्ता की तरह किया है। वह बयानबाजी की कला में औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का भी प्रमाण देता है, कम से कम प्री-जिम्नेजियम स्तर पर।

यानी ग्रीको-रोमन शिक्षा प्रणाली में प्रशिक्षण के स्तर पर, जिसे हम कॉलेज या विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा मानते हैं। अब, यह न्यू टेस्टामेंट अध्ययनों में एक बहुत बहस का विषय है कि क्या कोई लेखक के बारे में कह सकता है कि उसे किसी भी स्तर पर बयानबाजी में औपचारिक प्रशिक्षण मिला है। हालाँकि, इब्रानियों के लेखक के संबंध में, उदाहरण के लिए, मार्क या जॉन जैसे लेखकों के साथ बहस की कम गुंजाइश है।

उदाहरण के लिए, इस प्री-जिम्नेजियम स्तर की शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों में, प्रो- जिम्नेजमाटा नामक पाठ्यपुस्तकें किसी विषय या विषय के विस्तार के अभ्यास हैं जो तर्कपूर्ण चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। इस तरह का अभ्यास प्रो- जिम्नेजमिक प्रशिक्षण के लिए आधारभूत है। एक बयानबाजी स्कूल में एक विशिष्ट अभ्यास में किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की कहावत या कहावत का ज्ञान लेना या एक थीसिस का प्रस्ताव करना और उसके समर्थन में तर्कों की एक श्रृंखला तैयार करना शामिल था।

पैटर्न कुछ इस तरह था। सबसे पहले, विषय का परिचय, उसके बाद वह कथन जिस पर तर्क दिया जाना है। फिर कथन को तर्क द्वारा समर्थित किया जाता है।

फिर कथन को विपरीत तर्क द्वारा समर्थित किया जाता है, अर्थात्, यदि कथन सत्य नहीं होता, तो यह मामला होता। लेकिन चूंकि यह मामला नहीं है, इसलिए कथन सत्य होना चाहिए। इसके बाद तुलना या सादृश्य से तर्क दिया जाएगा, मानव अनुभव के दूसरे क्षेत्र को देखते हुए जहां कथन के अंतर्निहित तर्क को एक तरह के पुष्टि प्रमाण के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

इसके बाद एक ऐतिहासिक उदाहरण या मिसाल दी जा सकती है, जहाँ कथन अतीत में किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या घटना के मामले में खुद को सच साबित करता है। इसके बाद, किसी सम्मानित अधिकारी, किसी ऐसे व्यक्ति का उद्धरण दिया जा सकता है, जिसकी आवाज़ संस्कृति में वज़न रखती है, और फिर थीसिस के पुनर्कथन या उस कथन पर कार्य करने के लिए एक आह्वान के साथ निष्कर्ष निकाला जा सकता है। यह मूल पैटर्न प्रो- जिम्मास्माटा की कई बची हुई पाठ्यपुस्तकों में दिखाई देता है, साथ ही बयानबाजी पर हैंडबुक, जैसे कि बयानबाजी विज्ञापन हेरेनियम का श्रेय सिसरो को दिया जाता है।

हम इब्रानियों के अध्याय 12, आयत 5 से 11 में बहुत ही मामूली संशोधनों के साथ इसी स्कूली किताब के नमूने को इस्तेमाल करते हुए पाते हैं। इस अंश में, लेखक अपनी थीसिस का परिचय देता है। तुम उस उपदेश को भूल गए हो जो तुम्हें बेटों के रूप में संबोधित करता है।

यह थीसिस स्वयं नीतिवचन के एक उद्धरण से आती है। मेरे बेटे, प्रभु के रचनात्मक अनुशासन, पैडिया को हल्के में मत लो, और न ही उनके द्वारा फटकारे जाने पर हिम्मत हारो। इस थीसिस को फिर एक तर्क द्वारा समर्थित किया जाता है, जो नीतिवचन के उस उद्धरण का भी एक हिस्सा है।

प्रभु जिससे प्रेम करते हैं, उसे अनुशासित करते हैं और जिस किसी पुत्र को ग्रहण करते हैं, उसे ताड़ना देते हैं। लेखक इस थीसिस को पुनः कथन के साथ आगे बढ़ाते हैं, जैसा कि इन अभ्यासों में आम है। इसलिए, रचनात्मक अनुशासन के लिए सहन करें।

भगवान आपको बेटों की तरह मानते हैं। फिर वह तर्क की पुष्टि करता है, यानी तर्क का समर्थन करने वाला एक और तर्क, यहाँ दर्शकों के पालन-पोषण और खुद के पालन-पोषण के सामान्य अनुभव को अपील करता है। क्योंकि वह बेटा कौन है जिसे पिता अनुशासन न दे? इसके बाद, हम विपरीत तर्क पाते हैं।

यदि आप रचनात्मक अनुशासन के बिना हैं, जिसमें सभी बच्चे भागीदार बन गए हैं, तो आप नाजायज हैं और सच्चे बेटे नहीं हैं। इसके बाद, तुलना या सादृश्य से तर्क दिया जाता है। इस मामले में, यह एक बहुत ही करीबी सादृश्य है, जो दिव्य माता-पिता के बारे में बात करने के लिए प्राकृतिक जैविक माता-पिता के दायरे को देखता है।

चूंकि हमारे जैविक पिता हमें शिक्षक के रूप में मिले हैं और उन्होंने उनका आदर किया है, तो क्या हमें आत्माओं के पिता के अधीन नहीं रहना चाहिए और जीवित नहीं रहना चाहिए? सादृश्य से यह तर्क, बदले में, एक अन्य तर्क द्वारा समर्थित है। क्योंकि उन्होंने हमें कुछ दिनों के लिए अनुशासित किया जैसा कि उन्हें सबसे अच्छा लगा, लेकिन वह हमें हमारे लाभ के लिए

अनुशासित करता है, ताकि हम उसकी पवित्रता में भागीदार बन सकें। लेखक फिर एक निष्कर्ष के साथ यह सब समाप्त करता है जिसमें एक मानक कहावत का उद्धरण शामिल है।

सभी रचनात्मक अनुशासन, जब तक मौजूद हैं, आनंददायक नहीं बल्कि दुखद लगते हैं, लेकिन बाद में, यह उन लोगों के लिए धार्मिकता का शांतिपूर्ण फल देता है जिन्हें इसके माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। इस श्लोक के पीछे की कहावत वास्तव में एक ऐसी कहावत है जो प्राचीन शैक्षिक ग्रंथों में अक्सर दिखाई देती है, कभी-कभी आइसोक्रेट्स को, कभी अरस्तू को। शिक्षा की जड़ें कड़वी होती हैं, लेकिन इसका फल मीठा होता है।

लेखक ने उस कहावत को संशोधित और विस्तारित किया है, जो स्वयं इन पाठ्यपुस्तकों में रचना के प्रारंभिक अभ्यासों में से एक है, लेकिन यह अभी भी यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लेखक ने दो कीवर्ड भी संरक्षित किए हैं, अनुशासन या शिक्षा, पेडेया, और फल, कार्पोस। इस प्रकार इब्रानियों के लेखक ने बयानबाजी के प्रारंभिक पैटर्न का स्पष्ट ज्ञान और महारत प्रदर्शित की है, इसे मामूली बदलाव के साथ इस्तेमाल किया है।

उदाहरण के लिए, तुलना से तर्क में तर्कसंगतता जोड़ना, इसे एक प्रसिद्ध कहावत के साथ समाप्त करना जो स्वयं प्राचीन शिक्षा के केंद्र में थी। इन सभी तरीकों से, लेखक ने खुद को अपने उपदेशात्मक उत्कृष्टता के आधार के रूप में एक मजबूत शैक्षिक आधार के रूप में दिखाया है। लेखक के बयानबाजी कौशल पर विचार करने से यह सवाल उठता है कि इब्रानियों वास्तव में क्या है और हमें संचार के इस अंश के बारे में कैसे सोचना चाहिए।

हम इसे आम तौर पर इब्रानियों को पत्र या इब्रानियों को पत्र के रूप में संदर्भित करते हैं, जो पॉल के गैलाटियन को पत्र या फिलिप्पियों को पत्र के अनुरूप है। हालाँकि, इब्रानियों की शुरुआत एक पत्र की तरह नहीं होती है, जो आम तौर पर एक प्रेषक द्वारा खुद को और अपने पते को पहचानने और अभिवादन भेजने से शुरू होती है। उस विशिष्ट पत्र की शुरुआत के स्थान पर, हम एक शानदार शुरुआती कथन पाते हैं जो सुनने वालों पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालने के लिए गणना की गई है ताकि उनके कानों को सुंदर लगे।

ईश्वर ने बहुत पहले हमारे पूर्वजों से विभिन्न और टुकड़ों में भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की थी, इन सबसे हाल के दिनों में उन्होंने हमसे एक बेटे के माध्यम से बात की है, जिसे उन्होंने सभी चीजों का वारिस नियुक्त किया है, जिसके माध्यम से उन्होंने युगों की रचना भी की है, जो ईश्वर की महिमा की चमक और ईश्वर के सार की छाप है, जो अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीजों को बनाए रखता है, खुद पापों के लिए शुद्धिकरण करके, ऊँचे स्थानों पर राजसी के दाहिने हाथ पर बैठ गया। इस शुरुआत में, लेखक प्राचीन बयानबाजी पुस्तिकाओं से ज्ञात कई बयानबाजी उपकरणों का उपयोग करता है जो पूरी तरह से सजावटी हैं। सबसे पहले, ग्रीक में उपदेश के शुरुआती 12 शब्द श्रोताओं का स्वागत अनुप्रास के एक शानदार उपयोग के साथ करते हैं।

अनुप्रास एक बहुत ही आम युक्ति है जिसका आज भी प्रचारकों द्वारा उपयोग किया जाता है और पसंद किया जाता है। एक आरंभिक व्यंजन का कई बार उपयोग किया जाता है, शायद किसी उपदेश के मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने के लिए। यहाँ, हमारे लेखक ने आरंभिक पद को

सजाने के लिए 12 शब्दों में पाँच बार अनुप्रास का उपयोग किया है, इस P ध्वनि को दोहराते हुए। अध्याय एक, पद तीन में सिर्फ़ दो पद बाद में दो समानांतर खंड, अन्य पहचानने योग्य प्राचीन शैलीगत उपकरणों का उपयोग करते हैं।

इन्हें होमो- आर्कटन और होमो- टैलूटन कहा जाता है, जो शब्दों या वाक्यांशों की शुरुआत या अंत में ध्वनियों की एक ही श्रृंखला के साथ आंतरिक तुकबंदी बनाते हैं। इस प्रकार, अध्याय एक, श्लोक तीन में, हमारे पास ये दोहराए गए ताल हैं। ये अलंकरण हैं जो अलंकारिक कलात्मकता पर ध्यान देने की दूसरी परत का सुझाव देते हैं, लेकिन साथ ही लेखक की इस जागरूकता को भी हमारे सामने रखते हैं कि वह जो गढ़ रहा है वह एक पाठ नहीं बल्कि एक कथन है, मौखिक प्रस्तुति के लिए एक टुकड़ा जिसे आंखों के बजाय कानों द्वारा सुना और सराहा जाना चाहिए।

इस आरंभ में प्रतिपक्ष की अलंकारिक युक्ति का भी प्रयोग किया गया है, जिसमें अनेक तत्वों वाले उपवाक्यों का निर्माण किया गया है, जिनमें से प्रत्येक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य में सहसंबद्ध सदस्य के साथ विरोधाभासी है। इस प्रकार, लेखक कहता है कि, पुराने दिनों में, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से पूर्वजों से बात की। फिर, इसके बाद आने वाले प्रतिपक्षी उपवाक्य में, इन अंतिम दिनों में, उसने हमसे एक पुत्र के माध्यम से बात की।

इस तरह, लेखक ने ईश्वर के पहले बोलने के तरीके और अब ईश्वर के बोलने के तरीके के बीच एक मनभावन, कलात्मक संतुलन बनाया है, जिसमें वह खूबसूरती और कलात्मक तरीके से विषय-वस्तु का संचार करता है। ऐसे कई तरीकों से, लेखक प्रो- जिम्नास्माटा के बुनियादी स्तर से भी आगे बयानबाजी के प्रशिक्षण का सबूत देता है। लेखक अपने पूरे उपदेश में आँखों से पढ़ने के बजाय बोलने और सुनने के कथित कृत्यों पर भी ध्यान देता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, शुरू से अंत तक, वह इस बात से पूरी तरह अवगत है कि उसका संदेश एक बोला हुआ संदेश है जिसे सुना जाएगा, न कि एक लिखित संदेश जिसे पढ़ा जाएगा। इसलिए, विडंबना यह है कि हम इसके बारे में पढ़ते हैं, और हमारे पास कहने के लिए बहुत कुछ है जिसे समझना मुश्किल है क्योंकि आप सुनने में सुस्त हो गए हैं। या, इसलिए, जैसा कि पवित्र आत्मा कहता है, आज यदि आप उसकी आवाज़ सुनते हैं, तो अपने दिलों को कठोर न करें।

या, अब, परमेश्वर ने आने वाली दुनिया को, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया। और उपदेश में थोड़ी देर बाद, भले ही हम इस तरह से बोलते हैं, प्रिय, हम आपके मामले में बेहतर चीजों के बारे में आश्चस्त हैं। लेखक इस तरह से दिखाता है कि वह इब्रानियों के लिए उपदेश की रचना कर रहा है, संदेश के मौखिक वितरण और इसकी रचना की वक्तृत्वपूर्ण प्रकृति के प्रति सचेत है।

इब्रानियों के लेखक के बारे में एक और बात जो उनके उपदेश में स्पष्ट रूप से सामने आती है, वह है उनका सांस्कृतिक स्थान। अगर हम यह मान लें कि उन्हें औपचारिक बयानबाजी का कुछ स्तर का प्रशिक्षण मिला था, तो इसका यह मतलब नहीं है कि वह प्रशिक्षण किसी ग्रीको-रोमन या गैर-यहूदी-आधारित स्कूल के बीच में हुआ था। इसके विपरीत, शुरू से अंत तक, वह अपने पालन-पोषण के दौरान मुख्य रूप से यहूदी वातावरण में रहने की तस्वीर पेश करता है।

पुराना नियम हमारे लेखक को सांस्कृतिक संसाधनों का प्राथमिक सेट प्रदान करता है। हालाँकि, हमारे लिए यह ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है कि वह पुराने नियम को मुख्य रूप से इसके ग्रीक अनुवाद में शामिल करता है, जिसे आम तौर पर सेप्टुआजेंट कहा जाता है। सेप्टुआजेंट एक बहुत ही प्रारंभिक अनुवाद परियोजना थी जिसे यूनानी भाषी यहूदियों ने यहूदिया के बाहर यहूदी आबादी के लाभ के लिए शुरू किया था, जिनके लिए ग्रीक प्राथमिक भाषा बन गई थी और जिन्होंने अपनी पैतृक भाषा को लगभग पीछे छोड़ दिया था।

पहली पाँच पुस्तकें, कानून की पुस्तकें, संभवतः 250 ईसा पूर्व के आसपास ग्रीक में उपलब्ध थीं। अब, अनुवाद का हर कार्य मूल से कुछ दूरी का परिचय देता है। यहां तक कि अप्रमाणिक पुस्तक, द विजडम ऑफ बेन सिराह के अनुवादक जैसे प्राचीन लेखक भी इस दूरी के बारे में जागरूकता दिखाते हैं।

बेन सिराह के पोते, अनुवादक, हिब्रू और ग्रीक दोनों में धाराप्रवाह थे। अपने दादा के काम को हिब्रू से ग्रीक में अनुवाद करने के बाद, वह कुछ जगहों के लिए माफ़ी मांगते हैं जहाँ शायद उन्होंने गलती की हो या वह बारीकियाँ छूट गई हों जो उनके दादा संप्रेषित करना चाहते थे। अपने अनुवाद की प्रस्तावना में, वह हमें बताता है कि कानून और भविष्यद्वक्ताओं और अन्य पुस्तकों में भी अनुवाद में मूल से दूरी दिखाई देती है।

पुराने नियम के हिब्रू पाठ और ग्रीक अनुवाद, सेप्टुआजेंट के बीच जो दूरी है, वह कुछ ऐसी है जिसका हिब्रू के लेखक ने अपने तर्क के दौरान फ़ायदा उठाया है। उदाहरण के लिए, भजन 8 के हिब्रू पाठ में, हम पढ़ते हैं, तूने उसे, मानवजाति को, स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया है। हिब्रू में, थोड़ा शब्द स्पष्ट रूप से सृष्टि की सीढ़ी पर नीचे के स्थान को दर्शाता है।

लेकिन ग्रीक में, इसमें कुछ अस्पष्टता है। यह कम स्थानिक दूरी या थोड़े समय का संकेत दे सकता है। इब्रानियों के लेखक उस अस्पष्टता का लाभ उठाने में सक्षम हैं, ताकि भजन 8 को यीशु के अवतार की गवाही में बदल सकें, जब थोड़े समय के लिए, उनके सांसारिक जीवन के थोड़े समय के लिए, सूर्य को स्वर्गदूतों से कम बनाया गया था।

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक रूप से, लेखक इब्रानियों 10 में भजन 40 को उद्धृत करेगा, जो यीशु द्वारा खुद को बलिदान के रूप में पेश करने के बारे में उनके तर्क की आधारशिला है, जो एक स्तर पर और एक हद तक भगवान को स्वीकार्य था, जिसे लैव्यव्यवस्था के तहत निर्धारित पशु बलि कभी प्राप्त नहीं कर सकती थी। भजन 40 के हिब्रू पाठ में, हम पढ़ते हैं, बलिदान और भेंट की इच्छा आपने नहीं की, लेकिन आपने मेरे लिए कान खोदे हैं। अब, कान खोदने की वह छवि, निश्चित रूप से उत्पत्ति 2 की सृष्टि की कहानी को याद दिलाती है, जहाँ भगवान ने धरती की धूल से, मिट्टी से, मानो इसे ढाला हो, मनुष्यों को आकार दिया।

और, बेशक, पाठ का अर्थ यह है कि, कान बनाने के बाद, आप चाहते हैं कि मैं आपके कानून को सुनूं और उसका पालन करूं। उस भजन का यूनानी संस्करण कुछ अलग ही परिणाम देता है: आपने मेरे लिए कान नहीं खोदे हैं, बल्कि आपने मेरे लिए एक शरीर तैयार किया है। संभवतः,

यूनानी भाषी यहूदी जिसने उस भजन का अनुवाद किया था, उसे कान खोदने वाले ईश्वर की छवि पसंद नहीं आई और इसलिए उसने इसे इस वाक्यांश में सामान्यीकृत कर दिया, एक शरीर जिसे आपने मेरे लिए तैयार किया है, अभी भी ईश्वर द्वारा मानव प्राणी को बनाने के कार्य का उल्लेख करता है और अभी भी एक शरीर का अर्थ है जिसके साथ हे ईश्वर, आपकी आज्ञाओं का पालन करते हुए कार्य करना।

लेकिन इब्रानियों के लेखक को इस अनुवाद में एक खास शरीर के बारे में बात करने का अवसर मिलता है जिसे परमेश्वर ने तैयार किया था, यानी वह शरीर जिसे पुत्र ने यीशु के रूप में धारण किया। ऐसे कई तरीकों से, हम पाएंगे कि पुराने नियम में, अपने यूनानी अनुवाद में, लेखक के लिए व्याख्यात्मक और धार्मिक फल मिलता है जो मूल हिब्रू पाठ में शायद नहीं मिलता। लेखक मानता है कि श्रोता सेप्टुआजेंट पाठ के बारे में जागरूकता साझा करते हैं और, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे परमेश्वर के वचनों के रूप में इन पाठों के अधिकार के प्रति प्रतिबद्धता साझा करते हैं।

यह अंततः लेखक के अधिकार का स्रोत है क्योंकि वह अपना उपदेश देता है। वह उम्मीद करता है कि उसकी बात सुनी जाएगी और वह इस हद तक प्रेरक होगा कि वह अपने संदेश और अपने उपदेशों को इन साझा पवित्र ग्रंथों की व्याख्या में आधार बनाता है। इब्रानियों के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि लेखक इनमें से कई ग्रंथों की व्याख्या कैसे करता है।

लेखक हमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से दिखाता है कि कैसे भविष्यद्वक्ताओं और भजनों के माध्यम से परमेश्वर की अंशतः और आंशिक गवाही, पुत्र में, यीशु के व्यक्तित्व और कैरियर में दुनिया में परमेश्वर के कार्यों के लिए एक संयुक्त गवाह बन जाती है। इब्रानियों अध्याय 1, श्लोक 5 से 13 में, हम पुराने नियम के कई श्लोकों का सामना करते हैं, जिनके बारे में लेखक का मानना है कि उनका अर्थ यीशु के संबंध में है, और वह हमें दिखाता है कि उसके उपदेशों में उसकी व्याख्यात्मक रणनीतियों का कुछ हिस्सा है, जिसका सामना हम उसके पूरे उपदेश में करेंगे। पुराने नियम के पाठ उसके लिए अपना अर्थ प्रकट करते हैं जब उन्हें पुत्र से कहे गए शब्दों के रूप में पढ़ा जाता है, पुत्र के बारे में कहा जाता है, और कुछ मामलों में, जब पुत्र द्वारा बोले जाते हैं, तब भी जब उन्हें यीशु के होठों पर रखा जाता है।

लेखक पुराने नियम के ग्रंथों की प्रतीकात्मक व्याख्या के साथ भी काम करता है। इसका मतलब है कि वह पुराने नियम में ऐसे चरित्र या क्रियाकलापों को पाता है जो उसके अनुसार पुत्र और उसके कार्यों की ओर इशारा करते हैं, जो पुत्र और उसकी उपलब्धियों की छाया और संकेत हैं, जिनकी घोषणा पृथ्वी पर उसके आगमन से बहुत पहले की गई थी। उदाहरण के लिए, वह मूसा को यीशु के लिए एक प्रकार या एक मॉडल के रूप में देखता है, जो आने वाला मध्यस्थ है।

इसी तरह, वह लेवी के पुरोहित वर्ग, उसके कर्मियों, उसके अनुष्ठानों और उसके पवित्र स्थानों को एक प्रकार या मॉडल के रूप में देखता है, जिस पर यीशु के पुरोहित वर्ग और हमारे लिए यीशु की मृत्यु के परिणामों के बारे में बात की जा सकती है। यह लेखक के लिए एक प्रकार के आधार पर अपने दर्शकों के लिए उपदेश बनाने की संभावना भी खोलता है। उदाहरण के लिए, निर्गमन पीढ़ी की कहानी और मूसा और ईश्वर के वादों के प्रति उसकी खराब प्रतिक्रिया के आधार पर

अपने स्वयं के दर्शकों को यह समझने में मदद करने के लिए कि उन्हें यीशु की अंतिम मध्यस्थता के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए।

लेखक ने शुरू से अंत तक पुराने नियम की नैतिक व्याख्या भी की है, क्योंकि वह हमें अपने पुराने नियम के उदाहरणों के उपयोग में दिखाता है कि ईश्वर को कैसे जवाब दिया जाए, इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों मॉडल हैं। जबकि लेखक का प्राथमिक सांस्कृतिक स्थान यहूदी धर्मग्रंथों की दुनिया कहा जा सकता है, जिस पर वह किसी भी चीज़ से ज़्यादा निर्भर करता है, लेखक खुद को ग्रीको-रोमन दुनिया का नागरिक भी दिखाता है। यह एक यहूदी ईसाई के रूप में उसके स्थान के विरोध में नहीं है, बल्कि एक हेलेनिस्टिक यहूदी ईसाई के रूप में उसके स्थान के अनुरूप है, जो एक ऐसे व्यक्ति है जो बड़े ग्रीको-रोमन वातावरण में पला-बढ़ा है जिसने यहूदी धर्म को पहली शताब्दी ईस्वी के भूमध्यसागरीय दुनिया में कहीं भी कैसे देखा जाए, इस पर प्रभाव डाला है।

इसका एक उदाहरण लेखक द्वारा ग्रीको-रोमन शैक्षणिक ज्ञान के उपयोग में दिखाई देता है। अध्याय 5, श्लोक 8 में, लेखक कहता है कि यीशु ने, उद्धरण, उन चीज़ों से आज्ञाकारिता सीखी जो उसने झेली या जो उसने अनुभव की। इस श्लोक में, हमें ग्रीक शब्द इमाफेन और एपाफेन मिलते हैं, जो प्राचीन दुनिया में एक आम कहावत का गठन करते थे, जो सिखाते थे कि ज्ञान पीड़ा से आता है या सीखना अनुभव के माध्यम से आता है।

एपाफेन, एमाफेन, उसने कष्ट सहा, उसने सीखा। इस कहावत को एशेलियस, हेरोडोटस और शास्त्रीय ग्रीक, हेलेनिस्टिक और रोमन युग के कई अन्य लेखकों की रचनाओं में पाया जा सकता है। लेखक ग्रीको-रोमन संस्कृति में अपनी जड़ें भी दिखाता है जब वह सीखने में चरणों और प्रगति की बात करता है, यह विचार कि शिक्षा का एक प्रारंभिक चरण और शिक्षा का एक अधिक उन्नत चरण है, दूध पीने बनाम ठोस भोजन खाने के आंकड़ों का उपयोग करते हुए, जैविक स्तर पर बच्चों के पालन-पोषण और शैक्षणिक स्तर पर बच्चों के पालन-पोषण या शिक्षा के बीच एक समानता बनाता है।

इस प्रकार, वह अध्याय 5, श्लोक 11 से 14 में लिखते हैं, तुम सुनने में सुस्त हो गए हो, क्योंकि वास्तव में, यद्यपि तुम्हें समय बीतने के कारण शिक्षक होना चाहिए था, फिर भी तुम्हें फिर से किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो तुम्हें परमेश्वर के वचनों के प्राथमिक स्तर के सबसे बुनियादी सिद्धांतों को सिखाता रहे। तुम्हें ठोस भोजन के बजाय दूध की आवश्यकता है, क्योंकि जो कोई भी दूध पीता है वह धार्मिकता के वचन में अकुशल है, क्योंकि वह एक शिशु है। लेकिन ठोस भोजन परिपक्व लोगों के लिए है, जिन्होंने अपने कौशल को निरंतर अभ्यास के माध्यम से महान और निम्न के बीच अंतर करने के लिए प्रशिक्षित किया है।

ग्रीको-रोमन लेखक इसी तरह दूध बनाम मांस या दूध बनाम ठोस भोजन की उपमा का उपयोग शिक्षा के स्तरों के लिए एक छवि के रूप में करते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, पहली सदी के अंत में, दूसरी सदी के आरंभ में स्टोइक दार्शनिक एपिक्टेटस लिखते हैं, क्या आप इस देर की तारीख में, बच्चों की तरह, दूध छुड़ाने और अधिक ठोस भोजन लेने के लिए तैयार नहीं हैं? या फिर, आपको वे दार्शनिक सिद्धांत प्राप्त हुए हैं जिन्हें आपको स्वीकार करना चाहिए, और आपने

उन्हें स्वीकार कर लिया है। फिर आप किस तरह के शिक्षक की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि आप खुद को टाल दें, कि आप खुद को सुधारने को तब तक टालते रहें जब तक कि वह न आ जाए? आप अब एक बालक नहीं हैं, बल्कि पहले से ही एक पूर्ण विकसित वयस्क हैं।

इसके अलावा, एपिक्टेटस और इब्रानियों के लेखक दोनों ही इन रूपकों का उपयोग विशेष रूप से श्रोताओं को शर्मिंदा करने के लिए करते हैं, क्योंकि वे उस स्तर पर नहीं पहुँच पाते जहाँ उन्हें होना चाहिए और उन्हें लेखक द्वारा परिपक्व लोगों के लिए व्यक्ति की गई अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी तत्परता से खुद को परिपक्व साबित करने के लिए प्रेरित करते हैं। उसी अंश में, हम पाते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने परिपक्व आस्तिक का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया है जो महान और नीच के बीच अंतर करने के लिए सुसज्जित है। इसमें प्लेटोनिस्ट और स्टोइक द्वारा प्रचारित चार प्रमुख गुणों में से एक, ज्ञान के गुण की एक मानक परिभाषा शामिल है।

परिपक्व व्यक्ति जिसने दार्शनिक स्कूल द्वारा प्रस्तुत प्रारंभिक अनुशासन में पर्याप्त प्रगति की है, वह समूह जिसमें वह शामिल हुआ है, उसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उसके पास अच्छे और बुरे में अंतर करने की एक निश्चित विवेकपूर्ण विधि में सक्षम बुद्धि है, जैसा कि रेटोरिका एड हेलेनियम के लेखक ने कहा है। ऐसे कई तरीकों से, इब्रानियों के लेखक ने अपने बड़े हेलेनिस्टिक वातावरण के सांस्कृतिक ज्ञान को अपनी सोच और अपने उपदेशों में शामिल किया है।

एक बिंदु पर, लेखक यीशु को उसकी यहूदी विरासत के संदर्भ में नहीं बल्कि लगभग सभी यूनानी और रोमन दार्शनिक स्कूलों के महान नायक, अर्थात् सुकरात की याद दिलाने वाले तरीकों से प्रस्तुत करता है। अध्याय 2, श्लोक 14 और 15 में, इब्रानियों के लेखक लिखते हैं, तब से, बच्चों ने मांस और रक्त को साझा किया है। बेटे ने भी उन्हीं चीजों को पूरी तरह से साझा किया ताकि मृत्यु के माध्यम से, वह मृत्यु की शक्ति रखने वाले को नष्ट कर सके, अर्थात् निंदा करने वाले को, और उन लोगों को मुक्त कर सके जो मृत्यु के भय से अपने पूरे जीवन में गुलामी के लिए उत्तरदायी हैं।

कुछ बदलाव के साथ, यहाँ पहली सदी के रोमन दार्शनिक सेनेका द्वारा सुकरात को अपनी मृत्यु का सामना करते समय चित्रित करने के तरीके की प्रतिध्वनि देखी जा सकती है। जब कुछ लोगों ने सुकरात को दो सबसे भयानक चीजों: मृत्यु और कारावास के भय से मानव जाति को मुक्त करने का अवसर दिया, तो सुकरात ने भागने से इनकार कर दिया। दूसरी सदी में, व्यंग्यकार लुसियन ने एक ऐसे दार्शनिक के बारे में लिखा था जो अपने शिष्यों को वही सबक सिखाने के लिए खुद को आग लगाने वाला था जो सुकरात ने अपने शिष्यों को सिखाया था।

पेरेग्रीनस इस विशेष निकम्मे दार्शनिक का नाम था, और लुसियन लिखते हैं, इब्रानियों के अध्याय 2, श्लोक 14 और 15 में, हम पाते हैं कि हमारे लेखक ने यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपने अनुयायियों को मृत्यु के भय की गुलामी से मुक्त करने के लिए कठिनाई और मृत्यु की कठिनाइयों को गले लगाता है। बेशक, यह लेखक के विश्वदृष्टिकोण के लिए उचित रूप से अनुकूलित किया गया है, जिसमें यीशु को शैतान, निंदक के साथ युद्ध करते हुए शामिल किया गया है, जिसे मृत्यु की शक्ति रखने और भय के माध्यम से भगवान के बच्चों को बंधन में रखने के लिए इसका उपयोग करने का श्रेय दिया गया था। ग्रीको-रोमन संस्कृति का एक और पहलू जो इब्रानियों में दिखाई देता है, वह एथलेटिक्स है।

अध्याय 12, श्लोक 1 से 4 में, विश्वास के नायकों पर अपनी प्रशंसा के समापन पर, इब्रानियों के लेखक ने एक सुंदर एथलेटिक रूपक बनाया है। इसलिए, जब दर्शकों का इतना बड़ा समूह हमारे चारों ओर है, तो आइए हम भी हमारे सामने रखी दौड़ को धीरज के साथ दौड़ें, हर बोझ और पाप को दूर करें जो आसानी से फँसाता है, और विश्वास के अग्रदूत और परिपूर्ण करने वाले यीशु की ओर देखें। आपने अभी तक पाप का सामना करते हुए, खून-खराबे की हद तक विरोध नहीं किया है।

इन चार छोटी आयतों में, हमें स्टेडियम में आयोजित दौड़, दर्शकों से भरे स्टैंड और अंतिम आयत में कुश्ती मैच की छवियाँ मिलती हैं, जो पाप के विरुद्ध कुश्ती मैच है। लेखक अपने उपदेश में ऐसी छवियाँ लाता है जो किसी भी यूनानी शहर से परिचित हैं। प्राचीन यूनानी या रोमन शहरों में एथलेटिक्स का एक प्रमुख स्थान था, ठीक वैसे ही जैसे आधुनिक शहरों में है।

लेखक ग्रीको-रोमन संस्कृति के इस पहलू का लाभ उठाते हुए एक शक्तिशाली छवि बनाता है ताकि अपने नायकों को ईसाई संस्कृति और उससे जुड़ी मांगों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सके। तो फिर, जबकि हम इस लेखक का नाम नहीं जानते, हम उसके बारे में कई महत्वपूर्ण बातें जानते हैं। वह, पूरी संभावना है, पॉलिन इंजीलवादी टीम का हिस्सा था।

वह उस टीम के सदस्यों में से एक ऐसा व्यक्ति था जो बयानबाजी में, विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति में, प्रेरक होने के उद्देश्य से विशेष रूप से प्रशिक्षित था। वह पुराने नियम के शास्त्रों में गहराई से निहित था, खासकर इसलिए क्योंकि ये शास्त्र प्राचीन दुनिया में ग्रीक अनुवाद में मौजूद थे। वह ग्रीको-रोमन दुनिया का नागरिक है क्योंकि उसने यीशु के महत्व और श्रोताओं के जीवन पर यीशु के दावे की अपनी विशिष्ट प्रस्तुति को विकसित करने के दौरान इसके शैक्षणिक, दार्शनिक और एथलेटिक जीवन का लाभ उठाया।